शोध-सारांश

'सर्कस' और 'चंद्रमुखी' उपन्यासों में स्त्री-संघर्ष

स्त्री-संघर्ष आज के समसामयिक परिप्रेक्ष्य में एक ज्वलंत मुद्दा होने के साथ-साथ भारत में स्त्रियों की स्थिति को भी व्याख्यायित करता है।संजीव का उपन्यास 'सर्कस' और विश्वास पाटील का उपन्यास 'चंद्रमुखी' आज के समय के साक्षी हैं।प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध निश्चित रूप से कई मायनों में बेहद महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है।यदि इन उपन्यासों का विश्वपटल पर अध्ययन किया जाए तो इनमें चित्रित सर्कस और तमाशों में कलाकारों का संघर्ष सामाजिक,आर्थिक,राजनीतिक और शैक्षणिक स्तरों पर दिखाई पड़ता है। साथ-साथ दोनों उपन्यासों में व्यक्त स्त्रियों की स्थिति पारस्परिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर भी एक समान है।दोनों उपन्यासों के पात्र अपने-अपने स्तर पर संघर्ष करते नजर आते हैं।संजीव और विश्वास पाटील ने समाज की वास्तविक तस्वीर को पेश किया है दोनों लेखकों ने समाज की परिवर्तनशील प्रवृत्ति को भी उजागर किया है। वैदिक काल में स्त्रियाँ अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों एवं शोषण को समाज व परिवार में मान-सम्मान की वजह से शोषण को चुपचाप सहने के लिए तैयार थीं, परन्तु आज आधुनिक युग के समय में सभी स्त्रियाँ अपने ऊपर हो रहे अत्याचार एवं शोषण को चुपचाप सहने के लिए तैयार नहीं हैं। वे अब संगठित होकर एक शक्ति के रूप में अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध विरोध करती हैं।संजीव ने अपने इस विद्रोह के आरंभ का चित्रण किया है और विश्वास पाटील ने इस विद्रोह को शुरू से अंत तक दिखाया है।दोनों उपन्यास में आर्थिक दृष्टि से समाज में तीन वर्ग मिलते हैं–उच्च,मध्यम,निम्न।समाज में उच्च वर्ग संख्या में कम हैं, लेकिन देश का अधिकांश धन इन उच्च वर्गों के हाथों में है।दिन-प्रतिदिन अमीर और गरीब के बीच की खाई बढ़ती चली जा रही है और अधिकतर लोग गरीब होते चले जा रहे हैं।

गरीबी के कारण स्त्री-कलाकारों की स्थिति दयनीय हो ग ई है। शिक्षित न होने कारण इन कलाकारों की कला ही उनकी जीविका का एकमात्र साधन होती है।इन कलाकारों के जीवन की मूलभूत जरूरतों के लिए भी संघर्ष करता हुआ चित्रित किया गया है। संजीव और विश्वास पाटील ने दिखाया है कि किस प्रकार यह उच्च वर्ग,पूँजीपति,नेता,मालिक इन स्त्रियों का आर्थिक,शारीरिक,मानसिक शोषण करतेहैं। स्त्री अस्तित्व की बुनियाद और दुनिया की आधी आबादी से

जुड़ा हुआ है।जहाँ स्त्री अपने अस्तित्व की तलाश में दर-दर भटकते हुए संघर्ष कर रही है। देश में इन शोषण को रोकने के लिए कानून बनाए गए, पर इन नेता,मालिक और पूँजीपति लोगों के लिए यह कानून औपचारिक मात्र है। यही नेता संसद में कानून के बिल को पास करवाते हैं और ये आगे चलकर कानून की धज्जियाँ उड़ाते दिखाई पड़ते हैं। ये तमाम कानून-कायदे सिर्फ आम जनता पर ही लागू होते हैं।आज इसे ज़मीनी धरातल पर सख्ती से लागू करने की जरूरत है नहीं तो इन उपन्यासों की झरना और चंद्रमुखी जैसी स्त्रियाँ कुव्यवस्था की चक्की में पिसती रहेंगी। इस तरह की समस्याओं के फलने-फूलने से मानवीय मूल्यों का ह्रास होता है और आदर्श समतामूलक समाज के निर्माण में बाधा है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। इसमें तुलनात्मक साहित्य की सैद्धांतिकी की प्रविधि के प्रयोग द्वारा समस्या को विश्लेषित व व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है। इस अध्याय में संजीव और विश्वास पाटील के समय एवं रचना-संसार को दिखाते हुए उनके जीवन, साहित्यिक,विचारधारात्मक पहलूओं का विश्लेषण किया गया है। संजीव और विश्वास पाटील ने अपनी जीवनानुभूति के संघर्षपूर्ण चित्र को सर्कस और चंदमुखी उपन्यास में सजोए हैं।

द्वितीय अध्याय **'भारतीय स्त्रियों का जीवन और उनका संघर्ष' हैं जिसमें** स्वतंत्रता-पूर्व तथा स्वतंत्रता पश्चात के स्त्रियों के जीवन-संघर्ष तथा उनकी स्थितियों का विश्लेषण किया गया है। स्वतंत्रता-पूर्व भारतीय नारियों की दयनीय स्थिति थी। सती प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा, नारी अशिक्षा जैसी अनेक कुरीतियाँ स्त्री-समाज के समक्ष खड़ी थीं और आजादी के बाद भी कमोवेश वही स्थितियाँ हैं। स्त्री विमर्श के चिंतकों, लेखकों की मतों के माध्यम से स्वतंत्रतापूर्व और स्वतंत्रता के बाद की परिस्थितियों के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात स्त्रियों की स्थितियों में बेहतरीन परिवर्तन नहीं हुए।

तृतीय अध्याय 'सर्कस'और 'चंद्रमुखी' में स्त्री-जीवन संघर्ष' है जिसमें स्त्री-जीवन-संघर्ष के तुलनात्मक स्वरूप को व्याख्यात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से दिखाया गया है। दोनों उपन्यासों की नायिका झरना और चंद्रमुखी शोषण की चक्की में पिस जाती हैं एक स्त्री किस प्रकार अपने पति या मालिक की वर्चस्ववादी प्रवृति से

टकराती हैं,इसकी जीवंत तश्वीर सर्कस व चंद्रमुखी उपन्यास में देखने को मिलती हैं। दोनों उपन्यासों की नायिका भले ही अपनी कला के माध्यम से संस्कृतियों का संरक्षण करती है लेकिन उन्हें हर जगह शोषण का ही शिकार होना पड़ता है।स्त्रियों की इन सभी समस्याओं की जड़ है आर्थिक गुलामी। इसलिए स्त्रियों को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक समानता की अत्यंत आवश्यकता है।

चतुर्थ अध्याय 'भाषा एवं शिल्प' में 'सर्कस' और 'चंद्रमुखी'उपन्यासों की भाषा एवं शिल्प पर चर्चा की गई है। 'सर्कस' की भाषा सरल और सहज होते हुए भी कहीं-कहीं मिश्रित है अंग्रेजी के अनेक शब्द इसमें मिलते है जबकि 'चंद्रमुखी' की भाषा चलती-फिरती है जो रामजी तिवारी और रमेशचंद्र तिवारी द्वारा अनूदित है जाहिर है मराठी में लिखा गया 'चंद्रमुखी' उपन्यास की भाषा एवं शैली की अच्छी परख अनुवादक को थी जो अनूदित चंद्रमुखी में देखने को मिलती हैं। 'चंद्रमुखी की भाषा समुच्य नर्तकी परिवेश से गुंफित है। 'चंद्रमुखी' उपन्यास की भाषा इतनी सहज - सरल एवं सम्प्रेषणीय है कि कहीं से भी नहीं लगता कि मैं अनूदित पुस्तक को पढ़ रही हूँ।

अत: संजीव और विश्वास पाटील के उपन्यास 'सर्कस' और 'चंद्रमुखी' के तुलनात्मक अध्ययन का यह प्रथम प्रयास है। दोनों ही जन-साधारण के लेखक हैं। दोनों की साहित्यिक रचना का उद्देश्य सर्कस और तमाशे की दुनिया में कार्य करने वाले स्त्रियों के जीवन की समस्याओं तथा उनके संघर्षों को उजागर करना है।इस तरह समान प्रवृत्तियों वाले दो भिन्न भाषाओं के साहित्यकारों के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-समस्या की तुलना के द्वारा उनके संघर्षों को अभिव्यक्त किया गया है।